

जिगर से चाहा जिहे- बोही दगा देते हैं ॥२॥  
गरज पड़ी तो फिर- अपना ये- बना लेते हैं ॥२॥

जिगर से - - - - - गरज पड़ी - - - - -

① हमें मालूम न था, ये रिवाज दुनियाँ का ॥२॥  
अपनी चाहत को, पूरा करके, भुला देते हैं ॥२॥

गरज पड़ी - - - - - जिगर से - - - - -

② हमने जी भरके, हंसाया था, यहाँ लोगों को ॥२॥  
आज मिलकर के, वही लोग, खला देते हैं ॥२॥

गरज पड़ी - - - - - जिगर से - - - - -

③ तमाम उम्र भर- करते रहे- भला जिनका ॥२॥  
दवा के बदले में- वो जहर- पिना देते हैं ॥२॥

गरज पड़ी - - - - - जिगर से - - - - -

④ जिनकी चाहत के लिये- अपनी जान निधावर थी ॥२॥  
खुद तो मिलने से रहे- मौत दिना देते हैं ॥२॥

गरज पड़ी - - - - - जिगर से चाहा - - - - -

⑤ बड़ी तरीक़ा से- सब काम-निकाले ~~अपने~~ ॥२॥  
इस तरह "श्री बाबा श्री" ये लोग, सिना देते हैं ॥२॥

गरज पड़ी - - - - - जिगर से - - - - -